19-8-68 ओम शान्तिः प्रात: क्लास

बच्चों को रोज-2 याद दिलाते है कि देही-अभिमानी बनो क्योंकि बुधी इधर उधर चली जाती है। अन्त काल में भी कथा वार्ता सुनते है तो भी बुधी भटकती रहती है। यहां पर भी भटकती है इसलिये ही रोज-2 कहते है कि देहीअभिमनी बनो। वो तो कहेंगे हम जो सुनाते है उनपर ध्यान दो। धारणा करो। शास्त्र जो सुनाते है वो भी ध्यान मे रखो। यहां पर तो बाप सभी आत्माओं को समझाते है कि तुम सभी स्टुडण्टस देही-अभिमानी होकर बैठे हो। शिव बाबा आते है पढ़ाने लिये। ऐसा कोई और कालेज नही होगा जहां पर समझेंगे कि शिव बाबा हमको पढ़ाने आते है। ऐसा स्कूल होना ही चाहिये पुरुषोत्तम संगम युग पर। स्टुडण्टस बैठे है और समझते है कि परमपिता परमात्मा हमको आते है पढ़ाते है। पहली-2 बात समझाते है कि तुमको पावन बनना है तो मामएकम याद करो। परन्तु माया बार-2 भुला देती है। इसलिये ही बाप खबरदार करते है। कोई को समझाना है तो भी पहले-2 यही बाते कि भगवान कौन है? भगवान जो पतित पावन दुःख हर्ता सुख कर्ता है। वो कहां है। उनको याद तो सब करते है। जब कोई भी आफते आता है तो कहते है हे भगवान रहम करो। किसीको बचाना होता है तो भी कहते है हे भगवान। ओ गाड फादर हमको दुःख से लिबरेट करो। दुःख तो सबको ही है। पक्का मालूम है कि सतयुग को सुखधाम और कलयुग को दुःखधाम कहा जाता है। तुम बच्चे जानते भी हो फिर भी माया भुला देती है। यह याद मे बिठाने की रूम भी ड्रामा मेही है। क्योंकि बहुत है जो कि सारा दिन भर भी याद नही करते है। एक मिन्ट भी याद नही कर सकते है तो ही याद करने के लिये यहां पर बिठाया जाता है याद मे बैठने की युक्ति बताते है कि यह पक्का हो जावे कि बाप की याद से ही हम को सतोप्रधान बनना है। हम सतोप्रधान थे अब तमोप्रधान है। बाप ने तो फर्स्ट क्लास सच्ची युक्ति बताई है। पतित पावन तो एक ही है वो ही आकर युक्ति बताते है। यहां पर भी शान्तिः मे तभी बैठे हो जबकि बाप के साथ योग है। अगर बुधी का योग कहीं उधर ईधर लटक गया होगा तो शान्तिः आ ही नही सकती है। गोया कि अशान्तिः मे है। जितना समय इधर उधर बुधी का योग गया उतना ही समय निशफल गया। क्योंकि पाप तो कटे ही नही है। दुनियां यह भी नही जानती है कि पाप ~~कैसे नही कटेंगे~~ कैसे कटते है। यह बड़ी भारी बाते है। बाप ने कहा है कि मेरी याद मे बैठो। तो जब तक योग की तार जुटी हुई नही है तो तो तार जुट नही सकते है। तो इतना समय असफल किया। ~~बा~~ जरा भी बुधी इधर उतर गई वेस्ट हो गया2असफल हुआ। बाप का डोसअन्स है नां। इससे भला क्या होगा? ~~क्यों~~ इससे तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान जल्दी नही बनोगे। फिर वो ही आदत पड जावेगी। यह होता रहता है। बाप कहते है कि आत्मा का जो मूल घर है बाप कहते है कि आत्मा का मन जो बार-2 बाहर भागता है उनको फिर याद मे लगाओ तो जन्म जन्म के पाप भस्म हो जावेंगे। इस जन्म के पापों को तो हर एक कोई जानता है। इस जन्म के पाप तो अपने हर कोई जानता है। कई कहते है कि हमको याद नही रे। 3-4वर्ष से लेकर बातें सभी याद रहती है। शुरू मे इतने पाप इकटे नही होते है। जितना पीछे होते जाते है दिन प्रदिन क्रिनमल आये है लते जाती है। त्रेता मे भी दो कलायें कम हो जाती है। चन्द्रमा की दो कलायू कितने मे ही ~~खत~~ === खत्म हो जाती है। रोज-2 कम होती है। 15 रोज मे कलाये कम हो जाती है। चन्द्रमा को ग्रहण तो ~~86~~ को भी 16 कला सूर्पण कि जाता है। सूर्य कोई नही कहते है। एक का ही मिसाल देते है। चन्द्रमा की तो है एक मास की बात यह है फिर कल्प की बात। दिन प्रति दिन नीचे उतरते ही जाते है। फिर याद की यात्रा से ऊपर चढ़ सकते है। फिर तो कायदा ही नही है कि याद करे और ऊपर चढ़ सकें। सतयुग के बाद तो फिर नीचे ही उतरना है। वहां भी याद करते तो नीचे उतरते ही नही। ड्रामा अनुसार उतरना ही है तो फिर याद भी नही करते है। उतरना भी जरूर है फिर याद करने का ऊपास्य भी बाप ही बताते है। जबकि ऊपर जाना है। संगम पर ही आकर बाप बताते है कि अब चढ़ती कला शुरू होनी है। हमको तो फिर अपने सुखधाम मे जाना होता है। बाप कहते है कि अब सुखधाम मे जाना है तो मुझे याद करो तो तुम्हारी आत्मा पावन बन जावेगी। रचता—

और रचना की आ:म:अ: को तो तुम जान ही गये हो। आगे तुम भी कहते थे कि परमात्मा सर्वव्यापी है। जो ही दुनियां कहती थी। अभी तुम ऐसे नही कहते हो। तुम दुनियां से निराले हो। वैकुण्ठ दुनियां के बिलकुल ही निराले हो। वैकुण्ठ था। अब नही है। कल्प की आयु बहुत लम्बी कर दी है। इसी कारण भूल गये है। अभी तुम बच्चो को तो वैकुण्ठ बहुतनजदीक दिखाई पड़ता है बाकी थोडा समय है। याद की यात्रा मे हीकमी है इसलिये ही समझते है कि अभी समय है। याद की यात्रा जितनी होनी चाहिये उतनी नही है। तुम पैगाम पहुचसते जाते हो ड्रामा के प्लान अनुसार। कोई को भी पैगाम नही देते है तोगोया सर्विस नही कर सकते है। सारी दुनियां मे पैगाम तो पहुचाना ही है कि बाप कहते है कि मामेकम् याद करो। गीता पढ़ने वाले जानते है कि एक ही गीता शास्त्र हैजिसमेंयह महावाक्य है। परन्तु उसमे तो कृष्ण भगवानोवाच्य लिख दिया है तो याद किसको करें? भल शिव की भक्ति करते है परन्तु यर्थाथ ज्ञान नही है जो कि श्रीमत पर चले। इस समय तुमको मिलती है ईश्वरिय मत। इसके पहले थी मानव मत। ईश्वरिय मत और मानव मत मे रात-दिन का फर्क है। मानव मत कहती है कि ईश्वर सर्वव्यापी है। ईश्वर की मत कहती है कि नही बाप कहते है किमै आया हूं स्वर्ग की स्थापना करने तो जरूर यह नर्क है। यहां पर पांच विकार ही सबमें प्रवेश है। विकारी दुनियां है तो ही तो मै आता हूं निरी वकारी बनाने। सबमे पांच विकार प्रवेश है। जो ईश्वर के बने वो जिनके पास ईश्वर है उनमे तो विकार हो नही सकते है। ईश्वर को भी निरविकारी ही कहेंगे। ईश्वर के जो पहली रचना है स्वर्ग उनको भी निरविकारी ही कहेंगे। रावण को तो निरविकारी नही कहेंगे। रावण का तो चित्र ही दस सिरो वाला दिखाते है। कब कोई कह नही सकते है कि रावण की सिष्टी भी कब निरविकारी हो सकती है। अब है कलयुगी रावण का राज्य। सतयुग है राम राज्य। कोई विकार नही। हर साल रावण को जलाते ही रहते है परन्तु इसका मतलब तो कोई भी नही जानते है। इस समय मनुष्य कितना दुःखी है शरीर को कितने दुःख लगते है। समझा जाता है कि यह दुःखधाम है। इनको कोई भी सुखधाम नही कहेंगे। सुखधाम मे तो शरीरक दुःख भी नही होता है। यहां पर तो कितने हास्पिटल आदि भरे हुये है। इसको स्वर्ग कहना यह तो बडी भूल है। यह बाप तुम बच्चो को समझाते है। औरो को समझाने लिये। वो पढ़ाई कोई को समझाने लिये नही होती है। परिक्षा पास की और नौकरी मिली। यहां पर तो तुमको सभी को पैगाम देना है। सिर्फ एक बाप ही थोडी ही देंगे। जो बहुत होशियार है उनको टीचर कहा जाता है। जो कम होशियार है उनको स्टुडण्ट कहा जाता है। सबको पैगाम देना है। पूछना है कि भगवान को जानते हो? वो तो बाप है नां सबका। उनको ही परमपिता परमात्मा कहा जाता है। मूल है ही परमात्मा का परिचय देने की। क्योंकि कोई भी नही जानते है। ऊंच ते ऊंच बाप है। उनका कर्तव्य भी ऊंच है। सारी विश्व को पावन बनाने वाला है। बराबर सारी विश्व पावन थी। नई दुनियां मे जरूर भारत ही था। और कोई धर्म वाला कह नही सकेंगे कि हम नई दुनियां मे आवेंगे। वो तो समझते है कि हमारे से आगे कोई होकर गये है। क्राईस्ट भी कोई मे आवेंगे तो जरूर उनके आगे भी कोई था नां। यह किसीको भी पता नही है कि नई दुनियां मे यह राज्य कैसे स्थापन हुआ। बाप बैठ समझाते है कि मै इस ब्रहमा तन मे प्रवेश करता हूं। यह भी कोई मानते नही है कि इस ब्रहमा के तन मे आते है। और ब्राहमण तो जरूर चाहिये नां। ब्राहमण कहां से आवेंगे। जरूर ब्रहमा से ही आवेंगे। अच्छा ब्रहमा का बाप कब सुना? कोई बता नही सकेंगे। ब्रहमा तो गाया हुआ है। प्रजापिता भी है जैसे निराकार शिव बाबा कहते है। उनका बाप बताओ? फिर साकार प्रजापिता ब्रहमा का बाप बताओ? शिव बाबा तो रेडापटेड किया हुआ नही है। यह तो रेडापटेड किया हुआ है। कहेंगे कि इनको तो शिव बाबा ने रेडाप्ट किया है। विष्णु को शिव बाबा ने रेडाप्ट किया है ऐसे भी नही कहेंगे। यह तो तुम जानते होकि ब्रहमा ही से फिर(ल-न)विष्णु बनते है। रेडापटेड तो हुआ ही नही। शंकर के लिये भी बताया है कि उनका तो कोई भी पार्ट है ही नही। ब्रहमा से वि, वि से ब्रहमा। यही ८४ का चक्र है। शंकर फिर कहां

से आया? उनकी रचना कहां है? बाप की तो रचना है। सब आत्माओं का बाप वो ही है। और ब्र, की रचना है यह सब मनुष्य। शंकर की रचना कहां है? शंकर से मनुष्यों की दुनियां नही रची जाती है। पिछाडी मे फिर गाली देते है। शंकर पावर्ती पिछाडी फिदा हुआ। फिर बिच्छु-टिण्डन पैदा हुये यह कलंक लगा दिया है। क्या बिच्छु टिण्डन पैदा किये वां आरेव रेवाली तो विनाश हो गया। जैसे और अनेक बाते बनाई है वैसे ही यह भी बात बनाई है। त्रिमूर्ती ब्रहमा भी हो नही सकता है। ब्रहमा से विष्णु विष्णु से ब्रहमा तो दो मूर्ती हो गया नां। यह बाते भी सिवाय बाप के कोई समझा नही सकते है। बाप ही आकर समझाते है। फिर भी बार-2 भूल जाते है। नम्बरवार बुधियां है नां। जितनी बुधी उतनी ही टीचर की पढाई धारन कर सकते है। यह है बेहद की पढाई। पढाई अनुसार ही फिर नम्बरवार पद पाते है। भल पढाई एक ही है मनुष्य से देवता बनने की। परन्तु राजधानी बनती है नां। यह भी बुधी मे आना चाहिये कि हम कौनसा पद पावेंगे है। राजा बनना तो बहुत मेहनत का काम है। राजाओंके पास तो फिर दास दासियां भी चाहिये। प्रिन्स-प्रिन्सेज की शादी होती है तो पार्चेन्चार अपनी ही दासियां दे देते है। क्योंके अगर वहां पर नई दासियां मिलेगी तो उनसे माथा मारना पडे। सिखलाने के लिये। इसलिये ही अन्नय दासियां दे देते है कि कोई भी तकलीफ वो फील नां करे। सतयुग मे तो भाव-सब्भाव होता ही नही है। दासियां हो अण-बण वाली होगी तो लडती रहेगी। यह बाते वहां होती नही है। घिसी-पिटी दासियां मिलती है। तो सतयुग मे भी ऐसे ही होना चाहिये। कौन दासियां ही बनने है वो भी समझ सकते है। ज्ञान से घिसे पिट नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार मिलते होगें। तो ऐसा तो नही पढना चाहिये जो कि जन्मजन्मान्तर दास-दासी ही बनना पडे। पुरुषार्थ करना है ऊंच बनने का। तो सच्ची-2 शान्ति तो बाप को याद करने मे ही है। जरा भी बुधी इधर उधर गई तो समय वेस्ट हो जावेगा। कमाई कम होगी। सतोप्रधान बन नही सकेंगें। यह भी समझते है कि कम कार डे... शरीर को तन्दरुस्त रखने के लिये घूमना फिरना यह भी भल करो। परन्तु बुधी मे बाप की याद ही रहे। अगर साथी हो तो भी इरमुई-इगंमुई नही करनी है। यह तो हर एक की दिल गवाही देती होगी। बाबा समझा देते है कि ऐसी अवस्था मे चक्र लगाओ। पादरी लोग जाते है एकदम शान्त में। तुम लोग भी ज्ञान की बाते ही तो सारा समय नही करेंगें। फिर जवान को शान्तिः मे लाने के लिये शिव बाबा की याद की रेस करते रहो। जैसे खाने समय भी बाबा कहते है नां याद मे बैठ कर खाओ। अपना चार्ट देखो। बाबा अपना तो बताते है कि हम भूल जाते है। कोशिश करता हूं पुरा ही समय याद मे रहने की। बाबा को कहता हूं कि बाबा हम पुरा समय याद मे रहेंगें आप हमारी खासी बन्द कर देना। शुगर बन्द कर देना। अपने ही साथ जो मेहनत करता हूं वो बताता हूं। परन्तु मै तो खुद ही भूल जाता हूं फिर खासी वां शूगर कम कैसे होगी। जो-2 बाते बाबा साथ करता हूं वो सत्य-2 बताता हूं। बाप बच्चो को बता देते है बच्चे बाप को नही बताते है। लज्जा आती है। झाडू लगाऊं, खाना पकाऊं तो भी शिव बाबा की याद मे ही रह कर फिर उसमे भी ताकत आ जाती है। यह भी युक्ति है। इससे तुम्हारा ही कल्याण होगा। फिर तुम याद मे बैठेगे तो औरो को भी कशिश होगी। एक दो को कशिश तो होती है नां। जितना तुम जास्ती याद मे रहेंगें उतना ही सन्नाटा अच्छा हो जावेगा। एक दो का प्रभाव ड्रामा अनुसार पड़ता है। याद की यात्रा तो बहुत ही कल्याणकारी है। इसमे झूठ बोलने की दरकार ही नही। सच्चे बाप के बच्चे हो तो सच्चा बन कर चलना चाहिये। बच्चो को तो सबकुछ मिलता है। विश्व की बादशाही मिलती है फिर हब्बा करके 10-20 साड़ियांआद क्यो इकठी करते हो? अगर इकठी करते ही रहेंगें तो मरते समय भी कपडे साडियां आद ही याद आवेंगें। इसलिये ही उनका मिसाल भी देते है कि स्त्री ने कहा था कि लाठी भी छोडो। नही तो वो भी याद आवेगी। कुछ भी रहना नही चाहिये नही तो अपने लियेही मुसीबत लाते हो। बाप के पास बैठे हो बाप के पास आने पर वां लिखने पर बाबा ऐक्शन कर देंगें। झूठ बोलने से तो सोणा पाप चढ़ जावेगा। शिव बाबा का तो भण्डारा सदैव भरा रहता है फालती-2 रखने की भी क्या दरकार है। हबश नही होनी चाहिये। अच्छा बच्चो को गुडमार्निंग